

Maximilien Robespierre: Mandat - 271.

1) - वाक्यलेखन काल में वाक्यलेखन की विशेषताएँ क्या हैं? उनका उदाहरण, प्रभाव और महत्त्व क्या हैं?

→ वाक्यलेखन का अर्थ है वाक्य के अर्थ और भाव को सही ढंग से व्यक्त करना।

2) - वाक्यलेखन के अर्थ और महत्त्व को स्पष्ट करने के लिए दो प्रश्न पूछिए -
 i) Three Dialogues between Hylas and Philosophy (Platonism).
 ii) A Treatise on Concerning the Principles of Human Knowledge.

3) - वाक्यलेखन के अर्थ और महत्त्व को स्पष्ट करने के लिए दो प्रश्न पूछिए -
 - वाक्यलेखन का अर्थ क्या है?
 - वाक्यलेखन का महत्त्व क्या है?

→ वाक्यलेखन का अर्थ है वाक्य के अर्थ और भाव को सही ढंग से व्यक्त करना।

→ वाक्यलेखन का महत्त्व है कि यह वाक्यलेखन को सही ढंग से व्यक्त करने में मदद करता है।

→ वाक्यलेखन का अर्थ है वाक्य के अर्थ और भाव को सही ढंग से व्यक्त करना।
 - वाक्यलेखन का महत्त्व है कि यह वाक्यलेखन को सही ढंग से व्यक्त करने में मदद करता है।
 - वाक्यलेखन का अर्थ है वाक्य के अर्थ और भाव को सही ढंग से व्यक्त करना।

4) - वाक्यलेखन का अर्थ और महत्त्व क्या हैं?

→ वाक्यलेखन का अर्थ है वाक्य के अर्थ और भाव को सही ढंग से व्यक्त करना।
 - वाक्यलेखन का महत्त्व है कि यह वाक्यलेखन को सही ढंग से व्यक्त करने में मदद करता है।
 - वाक्यलेखन का अर्थ है वाक्य के अर्थ और भाव को सही ढंग से व्यक्त करना।

5) - वाक्यलेखन का अर्थ और महत्त्व क्या हैं?

→ वाक्यलेखन का अर्थ है वाक्य के अर्थ और भाव को सही ढंग से व्यक्त करना।
 - वाक्यलेखन का महत्त्व है कि यह वाक्यलेखन को सही ढंग से व्यक्त करने में मदद करता है।
 - वाक्यलेखन का अर्थ है वाक्य के अर्थ और भाव को सही ढंग से व्यक्त करना।

6) - वाक्यलेखन का अर्थ और महत्त्व क्या हैं?

→ वाक्यलेखन का अर्थ है वाक्य के अर्थ और भाव को सही ढंग से व्यक्त करना।
 - वाक्यलेखन का महत्त्व है कि यह वाक्यलेखन को सही ढंग से व्यक्त करने में मदद करता है।
 - वाक्यलेखन का अर्थ है वाक्य के अर्थ और भाव को सही ढंग से व्यक्त करना।
 - वाक्यलेखन का महत्त्व है कि यह वाक्यलेखन को सही ढंग से व्यक्त करने में मदद करता है।
 - वाक्यलेखन का अर्थ है वाक्य के अर्थ और भाव को सही ढंग से व्यक्त करना।

ii. A Treatise concerning the principles of Human knowledge.

2) ব্যৱস্থাৰ লক্ষ্য ব্যক্তিৰ পূৰ্ণতা ব্যৱস্থাকো চৰুণ ব্যৱস্থান? ইয়াৰ
ব্যৱস্থাকো অক্ষমতাৰ লক্ষ্যৰ বহুত লৈচা?

=> ব্যৱস্থাৰ লক্ষ্য ব্যক্তিৰ বিস্তৃত ব্যৱস্থা উদ্ভাৱক চৰুণ ব্যৱস্থান।
এ লক্ষ্যৰ সৈতে অক্ষমতা বা অক্ষমতা হৈছে অক্ষমতা
বহুত লৈচা নহয়, পূৰ্ণতা বহুত লৈচা নহয়। ইয়াৰ বিকাস
বহুত অক্ষমতাৰ লক্ষ্য অক্ষমতাৰ লক্ষ্য হৈছে লৈচা লৈচা লৈচা
বিস্তৃত প্ৰত্যয় বা ব্যৱস্থা, লক্ষ্য তাই বালক অক্ষমতা অক্ষমতা
অক্ষমতাৰ লৈচা লৈচাৰ উদ্ভাৱক।

3) ব্যৱস্থাৰ লক্ষ্যৰ বহুত ব্যক্তিৰ ব্যৱস্থান?
ব্যৱস্থাৰ সৈতে বিস্তৃত অক্ষমতাৰ ব্যৱস্থাৰ ব্যৱস্থা অক্ষমতাৰ
অক্ষমতাৰ লৈচা অক্ষমতাৰ লৈচা। অক্ষমতাৰ লৈচা লৈচা লৈচা
লৈচা অক্ষমতাৰ লৈচা নহয়, ব্যৱস্থাৰ লৈচা লৈচা লৈচা লৈচা

4) লক্ষ্যৰ প্ৰত্যয় ব্যক্তিৰ ব্যক্তি?
লক্ষ্যৰ লৈচা অক্ষমতাৰ অক্ষমতাৰ লৈচা অক্ষমতাৰ লৈচা
লক্ষ্যৰ লৈচা অক্ষমতাৰ লৈচা অক্ষমতাৰ লৈচা, অক্ষমতাৰ
অক্ষমতাৰ লৈচা লৈচা লৈচা লৈচা লৈচা লৈচা।

5) অক্ষমতাৰ সৈতে বহুত ব্যক্তিৰ ব্যক্তি?
=> অক্ষমতাৰ সৈতে অক্ষমতাৰ লৈচা অক্ষমতাৰ লৈচা
লৈচা, অক্ষমতাৰ লৈচা লৈচা লৈচা লৈচা লৈচা
অক্ষমতাৰ লৈচা লৈচা লৈচা লৈচা লৈচা লৈচা
লৈচা লৈচা লৈচা লৈচা লৈচা লৈচা লৈচা
অক্ষমতাৰ লৈচা লৈচা লৈচা লৈচা লৈচা লৈচা
লৈচা লৈচা লৈচা লৈচা লৈচা লৈচা লৈচা

Name:- Rumana Sultana

Roll No:- 285

সার্কলে মোহারল্যাবে অবিবাসী ছিলেন। তাঁর
আম্ববাদ প্রসঙ্গে লেখা দুটি গ্রন্থের নাম হল -

1) A Treatise concerning the Principles
of Human Knowledge.

2) Three Dialogues between Hylas
and Philonous..

সার্কলে লোক কমিত বিমূর্ত স্বীকার গ্রহণ করেন।
লোক বিমূর্ত স্বীকার বলতে বুঝিয়েছেন যে এক
জাতীয় বিভিন্ন বস্তু বা বিষয় থেকে আধার
স্বীকারে গুরুত্ব করে নিয়ে যে স্বীকার গঠন করা
হয় তাই হল বিমূর্ত স্বীকার বা আত্মানু স্বীকার।

নামবাদ:- সার্কলে নামবাদ বলতে বুঝিয়েছেন,
যে এক জগতে আধার বা আত্মানু স্বীকার
বলে কিছু নেই, তেমনি বিমূর্ত স্বীকার বলেও
কিছু নেই। এক জগতে আছে কেবল
বিশেষ বিশেষ বস্তু ও বস্তুসমূহের স্বীকার।
সর্বোপরি আছে তাদের বিশেষ বিশেষ প্রতিক্রিয়া।

প্রত্যয়বাদ :- লোক বাহ্যজগতে আমাদের
অস্তিত্ব অস্বীকার করলেও মনোমার্গে
আমাদের স্বীকার বা প্রত্যয়ে অস্বীকার
করেনি। বৈজ্ঞান্য, আমাদের সম্মুখে লোকের
মতবাদকে প্রত্যয়বাদও বলা হয়।

বস্তুবাদ :- স্রেষ্ঠে মনে করেন : জাগতিক বস্তু
অস্তিত্ব আমাদের জ্ঞানের বা জ্ঞানের ওপর নির্ভর
করে না, জাগতিক বস্তুসমূহের আমাদের মন
নিরপেক্ষ হলে অস্তিত্ব আছে, লোকের বস্তুবাদ
বলা হয়।

1) বার্কলে কোন কোন জীবিত জিন্মন? তাঁর ভাববাদ প্রসঙ্গে কোন কোন দুটি গ্রন্থের নাম লেখ।

→ ব. বার্কলে জায়ন্টাউর কিলকেনি বসাবে জীবিত জিন্মন।

□ তাঁর ভাববাদ প্রসঙ্গে কোন কোন দুটি গ্রন্থের নাম 2ন -

1) Three Dialogues between Hyles and Philonous. (1713)

2) A Treatise concerning the Principles of Human Knowledge, Part II (1710)

2) তিনি লক্ষ কথিত কোন কোন কারণে গ্রহণ করেন? দুই কারণে লক্ষের কত বস্তুই হু - তার কথায় বোঝাও।

→ তিনি লক্ষ কথিত বিদ্যুত জ্ঞান) কারণে গ্রহণ করেন।

□ লক্ষ কথিত জ্ঞান) 2ন আগলে মানুষের তার বোধিক্রিয় উদ্ভাবন।

লক্ষের ছাড়া জ্ঞান) যা জ্ঞান) বস্তু হোক বা বস্তুবিহীন।

কোনো বস্তুই এই বিদ্যুত জ্ঞান) বিশেষ বস্তু জ্ঞান) 2নো জ্ঞান) বস্তু হোক বা বস্তুবিহীন।

3) বার্কলে নাম্বাদ বলতে কী বোঝায়।

→ বার্কলে ছাড়া বিদ্যুত জ্ঞান) কারণে গ্রহণ করেন।

জ্ঞান) কারণে গ্রহণ করেন।

জ্ঞান) কারণে গ্রহণ করেন।

বার্কলে এই নাম্বাদকে বলতে হয় নাম্বাদ।

৪) লক্ষের প্রত্যয়বাদ কী ?

→ লক্ষ বাহ্যিক জগতে জ্ঞাতব্যের আভিষ্কার করলেও স্বপ্নের মাধ্যমে জ্ঞাতব্যের ধারণা ধরিয়ে দেয়। জ্ঞাতব্য জ্ঞানকে লক্ষের এই বৃত্তবাদকে প্রত্যয়বাদ বলে।

৫) স্নেহের বৃত্তবাদ কী ?

→ স্নেহের মাঝে জ্ঞাতব্য ধারণা স্নান জ্ঞানকে ধারণা জ্ঞান নয়, জ্ঞাতব্য, ধারণা ২য় স্নান জ্ঞান তথা স্নান জ্ঞান জ্ঞাতব্য ধারণা ২য় স্নান জ্ঞান। এই জ্ঞানের বিমোক্ষ বিমোক্ষ যত্ন ও বাস্তবিক জ্ঞান ২য় জ্ঞাতব্যের প্রতিনিধি বা অনুকরণ। জ্ঞাতব্য জ্ঞানকে স্নেহের এই আভিষ্কার বৃত্তবাদ নামে পরিচিত।

34) A E O - 4



— without colour figure

$P\bar{M} = 0$ (A)

$MS = 0$ (E)

$SP \neq 0$ (O)

— 1-2020

